

शब्द (Shabda)

BAI Hone & Sub Philosophy

प्राचीन दर्शन में अन्तर्गत नाम दर्शन में शब्द (Shabda) को प्राथमिकता देने का जो धारणा सामान्य माना जाता है। किन्तु विश्वकर्मिक धारणा को उपदेश या वाणी के माध्यम द्वारा शब्द कहा जाता है। शब्दों के माध्यम द्वारा ही अविद्यात्मिक या बीजकर्म की प्राप्ति के लिये आत्म प्रकाश या विश्वकर्मिक को श्राद्धिक अर्थ को ही प्राथमिकता दी जाती है। सभी प्रकार के श्राद्धिक ध्यान अर्थात् लक्ष्मी के लिये करते हैं।

प्राचीन उक्त धारणात्मिक माना जाता है कि आत्म प्रकाश किन्तु माना जाता है। आत्मकर्म कहा जाता है कि आत्म प्रकाश वह है जिसकी प्राप्ति अर्थात् है तथा लक्ष्मीकर्म के लिये उक्त अर्थात् ध्यान अन्तर्गत लक्ष्मी के लक्ष्मीकर्म कहा जाता है। लक्ष्मीकर्म में शब्द की परिभाषा के लिये कहा जाता है कि 'आत्मकर्म शब्दः'। अर्थात् आत्म प्रकाश के अर्थ या वाणी को शब्द ध्यान कहा जाता है। प्राचीन लक्ष्मी 'लक्ष्मीकर्म' में कहा है - 'आत्मकर्म शब्दः शब्दः'। लक्ष्मी, पुत्रादि, धर्मकर्मों में लक्ष्मी-पुत्रादि के लक्ष्मीकर्म वाणी को शब्द ध्यान कहा जाता है।

आत्म प्रकाश लक्ष्मी अर्थात् वाणी या अर्थ अर्थात् लक्ष्मी ध्यान को लक्ष्मीकर्म की प्राप्ति के लिये उक्त ध्यान को अर्थकर्मों के लिये कहा जाता है।

